सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• डॉ.प्रदीप 'दीप'

सृजक-सृजन-समीक्षा

डॉ. प्रदीप कुमार "दीप"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- **antrashabshakti@gmail.com**

अंतरताना- **www.antrashabdshakti.com**

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत "सृजक"
डॉ. प्रदीप कुमार "दीप"का परिचय

नाम : डॉ. प्रदीप कुमार "दीप"

जन्म तिथि : **02/08/1980**

ढ़ोसी, खेतड़ी, झुन्झुनू (राजस्थान)

माता का नाम : श्रीमती सन्तोष देवी

पिता का नाम : श्री धारा सिंह

धर्मपत्नी का नाम : श्रीमती विमला महरिया

शैक्षणिक योग्यता : एम०ए०,नेट ,सेट,जे०आर०एफ० **&** पीएच०डी० (भूगोल)

पत्राचार पता : डॉ० प्रदीप कुमार "दीप"

बेसवाल निवास, वार्ड न०- **15** , लक्ष्मणगढ़

जिला - सीकर, राज्य - राजस्थान **पिन 332311**

ई.मेल : **drojaswadeep@gmail.com**

मो०- **09461535077**

थीसिस : राजस्थान में जैवविविधता एवं जैवसंरक्षण : बीकानेर एवं जैसलमेर जिलों के विशेष संदर्भ में (**2011**)

सम्प्रति : ब्लॉक सहकारिता निरीक्षक एंव महाप्रबंधक,क्रय विक्रय सहकारी समिति लि० लक्ष्मणगढ़ (सीकर), सहकारिता विभाग,राजस्थान सरकार

अभिरूचि : अध्ययन,लेखन एवं जैवविविधता संरक्षण |

नेतृत्व : कॉलेज छात्रसंघ अध्यक्ष(**2001**)

प्रथम प्रकाशित कविता : "दीप-पुकार"-जगमग दीप ज्योति पत्रिका, अलवर(राज०)

प्रकाशित कहानी :"सुगनी"- जगमग दीप ज्योति पत्रिका,अलवर (राज०)

प्रथम प्रकाशित लेख : सतत् विकास में सहकारिता की भूमिका, नेशनल एक्सप्रेस ,नई दिल्ली | कविता,कहानी,लेख,छंद इत्यादि विधा में लेखन कार्य जारी... प्रथम काव्य संग्रह "दीपांजलि " प्रेस में

आत्मकथ्य

मेरा बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता | बचपन से ही बकरियों को चराते-चराते प्रकृति से गहन लगाव हुआ | नदी,झरने,पहाड़ आदि से गुजरता मेरा बचपन कब गुजरा इसका पता ही नहीं चला | शुरूआत में कक्षा **9** तक पढ़ाई के प्रति लापरवाह था और फिल्मों से गहन लगाव था | जब से समझ हुई साहित्य,संगीत और अध्ययन के प्रति रूचि हुई | मैंने स्नात्तक और परास्नातक में कॉलेज स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी प्रथम रहता था | मेरा प्रमुख लक्ष्य सिविल सर्विसेज में जाना था जबकि दूसरा लक्ष्य कॉलेज व्याख्याता बनना था | इस हेतु मैंने आई०ए०एस० की मुख्य परीक्षा तीन बार दी तथा राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित कॉलेज व्याख्या के लिए आयोजित परीक्षा में साक्षात्कार तक दो बार पहुँचा ,पर चयन नहीं हो पाया | तत्पश्चात वर्ष **2007** में राजस्थान प्रशासनिक सेवा में सहकारिता सेवा में चयन हो गया | चूँकि मेरा मुख्य विषय भूगोल रहा है पर साहित्य के प्रति मेरी रूचि कॉलेज स्तर से ही रही है | हिन्दी साहित्य के प्रति लगाव ने मुझे साहित्य से जोड़ा रखा | पहले मैं केवल पढ़ता ,सुनता और सुनाता था ,लेखन नहीं किया था कभी,परन्तु मैं अपनी साहित्यकारा पत्नी विमला महरिया की हर रचना उसे पढ़ कर सुनाता तो हम दोनों को अच्छा लगता और मेरी रूचि बढ़ती गई | स्वलेखन के क्षेत्र में मेरी रूचि तब हुई जब मेरी पत्नी पीएच०डी० के लिए डेढ़ माह के कोर्सवर्क हेतु उदयपुर गई | इस दौरान पता ही नहीं चला कि मैं विरह वेदना में कब लिखने लग गया और इस डेढ माह में मैंने **350** कविताऐं ,चार कहानियाँ,और पाँच लेख लिखे | सच कहा है - वियोगी होगा पहला कवि,आह से निकला होगा गान..अभी लेखन के क्षेत्र में मैं घुटनों के बल चला हूँ आशा और विश्वास है कि अपने अंतरा परिवार के सभी सदस्यों का आशीर्वाद सदैव बना रहेगा| मैं मनोज जी और प्रीति जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि इन्होनें रचनाकारों को अंतरा के माध्यम से एक सुनहरा अवसर दिया है अपनी प्रतिभा को निखारने का|

डॉ. प्रदीप कुमार "दीप"

"सृजक का सृजन"
माँ

ईश्वर की तू प्रतिकृति.....
विधाता की है , तू विधि |
ममता,समर्पण,स्नेह और,
'वात्सल्य' की गहन-निधि ||

तेरी 'ममता' का आँचल ,
सदा छाँव करता रहता |
तेरा निश्छल प्रेम ही मैया,
'अमृत' बनकर ,है बहता ||

'सहजता' है तुझमें समाई ,
'शीतलता' का पार नहीं |
खूब सताते बच्चे तुमको,
मन में कोई 'खार' नहीं ||

सूखा बिस्तर हमको देती,
गीले में खुद सोती है !!!
चैन ना आता तुमको जननी,
'तड़प' हमें ग़र होती है......

तेरी सृजन-शक्ति से ही ,
देख सका मैं ये संसार |
पूत,कपूत हुए अब देखो,
सुन ना पाएँ , तेरी पुकार ||

फिर भी तेरी दुआ यही है,
छू लें हम कोई "क्षितिज" |
"दीप" करे माँ तेरा वंदन ,
नतमस्तक हो, बन द्विज ||

नारी

नारी तुम केवल श्रद्धा नहीं ,
तु 'ब्रहम-विद्या 'स्वरूप है |
रिद्धि-सिद्धि ,अन्नपूर्णा...
और 'शक्ति-पुंज' का रूप है ||

सहनशीलता और त्याग का,
तू ही अकूत भंडार है.....
ममता,स्नेह और समर्पण,
तेरा ही नि:शब्द प्यार है ||

'पंचभूत' को, देकर आकार,
तुमने ही 'जग' को बनाया है |
क्या होता है ? स्व-बलिदान !
यह तुमने ही तो ,बतलाया है ||

'जननी' बनकर तुमने ही,
गर्भ में मानव को पाला |
पर ! मनुज ने आज देखो ?
तेरा अस्तित्व हिला डाला ||

माँ को बनाया , दु:खयारी ,
और दासी बनाया दारा को |
कैसा दौर विचित्र है आया,
अब मोड़ भी दे,तू धारा को ||

कदम बढ़ाओ ,अपने आगे ,
और अपनी स्व-पहचान करो |
"दीप" कवि आहवान करे....
कि मुझ पर ये, एहसान करो ||

कर्ज कभी ना उतरेगा

पहन बसंती चोले को, सीने पर खाई गोलियाँ ,
अपने वीर शहीदों ने, खेली खून की होलियाँ |
आजादी को गले लगाने ,निकली उनकी टोलियाँ,
इंकलाब के नारे को, बोली थी उनकी बोलियाँ ||

अपने लहू से सींच गये वो,आजादी के बाग को,
भारत माँ के 'भाल' सजाया,एक नये 'महताब' को |
शीश कटाकर झुकने ना दी,अपने सर की 'पाग' को ,
है क्या कोई ऐसा इंसा ? जो भूले ऐसी 'फाग' को ||

भूखे रहे ,हर जुल्म सहा,पर ! उफ तक भी ना कर पाये ,
तन-मन पर है घाव हुए,पर ! उनको वो ना भर पाये |
थी 'आजादी' प्यारी उनको,लौट के वो ना घर आये ,
कर दी अपनी जां निसार,और आँसू तक ना झर पाये ||

भारत के हर इंसा सुन लो,कर्ज कभी ना उतरेगा,
तुम भी ऐसा जोश भरो तो,अरि दूर से गुजरेगा |
ग़र नाग सा फण उठाए दुश्मन,तो "दीप"स्वयं भी कुचलेगा ,
'गद्दार' वही कहलाएगा,जो 'देशभक्ति' से मुकरेगा ||

सद्गुरू

लहरों से जो टकराए ,क़श्ती ऐसी वो बनाते हैं ,
अज्ञान - अंधेरा दूर कर ,प्रकाश ज्ञान का लाते हैं ।
डूबे ग़र तूफान में नैया ,पतवार वही तो चलाते हैं ,
जीवन की भटकी नैया को, वो ही पार लगाते हैं ॥

करते है वो नव-निर्माण ,नींव ऐसी रख जाते हैं ,
मजबूत नींव के ऊपर वो, सुन्दर महल बनाते हैं ।
संस्कार दे बच्चों को,एक फूल नया वो खिलाते हैं ,
सँवार भविष्य देश का,सशक्त राष्ट्र वो बनाते हैं ॥

त्याग,समर्पण,निष्ठा को,अपना हथियार बनाते हैं ,
सद्कर्मों के ताज को ,वो अपने सर पे सजाते हैं ।
संन्तोष ,गर्व का कर एहसास, शिष्यों को गौरव बताते हैं ,
पथ पर बिखरे काँटों को ,अपने हाथों से उठाते है ॥

कर्मठता का पाठ पढ़ाकर,योग्य हमें बनाते हैं ,
नैतिकता की बातों को, रोज हमें सिखलाते हैं ।
"दीप" सदा उस पथ पे चला, निज गुरू ,जो बताते हैं ,
आओ गुरू के भाल पर, सितारा नया सजाते हैं ॥

मजदूर हूँ

मजदूर हूँ
मजबूर नहीं
मन से मजदूरी करता हूँ ।

मैल नहीं
मन में कोई
माथे को सिंदूरी करता हूँ ।

मजहब
मेरा मजदूरी है
मैं ना कोई चोरी करता हूँ ।

मान मेरा
मेहनत से है
ना सीना - जोरी करता हूँ ।

मंदिर और
मस्जिद बनवाकर
मैं जोड़ा - जोड़ी करता हूँ ।

खाता हूँ
जिस थाली में
उसमें ना 'मोरी' करता हूँ ।

मन मेरा है
"दीप" के जैसा
उसकी तिजोरी भरता हूँ ॥

नारी हूँ और नाज भी हूँ

कल भी थी मैं ,आज भी हूँ !
सतत् तरंगित साज भी हूँ ।
सोच बदलनी होगी नर को,
नारी हूँ और नाज भी हूँ ॥

तूफानों से कब घबराई !
एक बुलंद ,आवाज भी हूँ ।
आँखों में रखती हूँ दरिया ,
नर की मैं परवाज भी हूँ ॥

गीत भी हूँ ,संगीत भी हूँ ,
शीतल मलय बयार भी हूँ ।
बन जाती मैं ,कभी दामिनी ,
मैं दुष्टों पर , प्रहार भी हूँ ॥

नर मुझको मन से अपनाए ?
तो सुरभित जय का हार भी हूँ ।
रणभेरी की नाद मैं बनकर !
वीरों का श्रृंगार भी हूँ ॥

देवकी और कौशल्या मैं ,
यशोदा-सी पालनहार भी हूँ ।
हर रूप में नर की रक्षा करती ,
एक सुन्दर ,सुख संसार भी हूँ ॥

कभी रूके ना,कभी थके ना ,
पावन गंगा-सी धार भी हूँ ।
जड़ता में चैतन्य भर दूँ ,
मैं जीवन का आधार भी हूँ ॥

घिरे कहीं तूफानों में नर ,
उसके लिए पतवार भी हूँ ।
ग़र मुश्किल खुद पर आए ,
मैं दुधारी , तलवार भी हूँ ॥

मीरा भी और राधा भी मैं ,
कभी रूकमिणी नार भी हूँ ।
मैं जागति हूँ , जागृति हूँ ,
एक रक्षक हथियार भी हूँ ॥

सदा"दीप" की बाती बनकर ,
जीवन की हमराज भी हूँ ।
सोच बदलनी होगी नर को ,
नारी हूँ और नाज भी हूँ ॥

बेवा का दर्द

सूना जीवन, बेदर्द बन गया !
दिखलाऊँ मैं ,किसको आज ?
सूनी माँग ! मन मेरा सूना !
जीऊँ या मर जाऊँ आज ??

हिम्मत टूटी ,चूड़ी फूटी ,
आस भी अब तो टूट गई !
गहने-चीर ,खाने को दौड़ें ,
किस्मत मेरी फूट गई !!

सास है कहती केश पकड़ ,
लाल मेरा क्यों खा गई ?
बंजर-मन-आँगन में मेरे ,
दर्द-वेदना समा गई ||

बोझिल दिन हैं ,कातिल रातें ,
तन्हाई से , करती बातें !
कैसे ? कितने ? जख़्म दबाकर ,
दु:ख में बैठी , काटूँ रातें ||

हे ! दीप कवि, ये दर्द मेरा ,
तू ना किसी को बतलाना !
ग़र हो कोई दर्द-ए-दवा ,
तुम पहले मुझको बतलाना ||

"सृजन की समीक्षा"

1.

श्रद्धेय डॉ. प्रदीप कुमार जी "दीप" समय समय पर आपकी रचनाओं का रसास्वादन तो करते ही है, लेकिन आज आपके प्रेरक आत्म कथ्य को पढ़कर मन प्रसन्न हो गया,..जैसे स्वर्ण तपकर ही शुद्ध होता है उसी प्रकार साहित्य सृजन विपत्तियों का वरण करने पर ही निखरता है..आपकी प्रस्तुत रचनाओं में उसका दर्शन होता है...मैं मेरी पसंदीदा तांका विधा से.रचनाओं की समीक्षा करने का प्रयास कर रहा हूँ..

(1)

माँ की उपमा
सहज शब्द कृति
नतमस्तक
दीप करे वन्दन

(2)

नारी महिमा
केवल श्रद्धा नही
अन्नपूर्णा है
अपनी पहचान
दीप करे आव्हान

(3)

कर्ज़ का बोझ
बसंती चोला सज़ा
है देशभक्ति
भारत माँ के भाल
स्नेह दीप जलाया

(4)

हे सद्गुरु
तूफान में है नैया
ज्ञान प्रकाश
अंधेरा दूर करे
दीप सुपथ चले

(5)

हूँ मज़दूर
मजबूर कभी नही
मन मे नही
कोई भी सीना जोरी
दीप जैसी तिज़ोरी

(6)

नारी का नाज़
तरंगित है साज़
आवाज़ भी हूँ
शीतल बयार हूँ
दीप हमराज़ हूँ

(7)

बेवा का दर्द
बेदर्द बन गया
हिम्मत टूटी
दर्द ए दवा दीप
मुझको बतलाना

सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक **है,..**आपकी कलम निरन्तर सृजन करती रहें...
उज्ज्वल भविष्य की शुभमंगल कामनाओं के साथ बहुत बहुत बधाई**...**

कैलाश बिहारी सिंघल

2.

आदरणीय प्रदीप जी का आत्मकथ्य पढकर बहुत सुखद लगा कवित्व भाव का बीजारोपण तो ईश्वर प्रदत्त है जो हर संवेदनशील व्यक्ति के हृदय में छुपा होता है प्रकृति के सानिध्य अनुकूल परिस्थितियों में वह बीज अंकुरित होकर हरे भरे वृक्ष का रूप कब धारण कर लेता है सचमुच पता ही नहीं चलता अहसास तो तब होता है जब उस वृक्ष की घनी छाया में ही अपनी जिंदगी को महसूस करने लगते हैं।

पीड़ाओं की कोख से ही काव्य का जन्म होता है इसका प्रमाण स्वंय दीप जी ने आत्माभिब्यक्ति में दिया है ।

इनकी सभी रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं की कोमल अनुभूति अनुभूतियों को ब्यक्त करतीं हैं और ये प्रमाणित करती है कि संसार पुरूष को चाहे कितना भी कठोर हृदय वाला कह ले पर कहीँ न कहीं नवनीत से भी मृदुल एक कोना अवश्य होता है जहाँ भावनाओं की अमृता सरसती है।

कुछ ऐसी ही अमृत धारा का रसास्वादन कराती है इनकी प्रथम रचना

"माँ "--जिसके वजूद की ब्याख्या करना आसान नहीं उसे

प्रदीप जी ने सुंदर भाव शिल्पों से अलंकृत किया है बानगी देखिए---

ईश्वर की तू प्रतिकृति**,....** विधाता की तू विधी

वाह-वाह क्या खूब! सचमुच विधाता की विधी अनुपम कृति के आगे सारे शब्द बौने हो जाते हैं ।

वहीं "नारी" इनकी दूसरी रचना में "नारी तुम केवल श्रद्धा हो "

से आगे बढकर अपनी उत्कृष्ट भावों को शब्द देते हुए प्रदीप

जी ने कहा "नारी ब्रह्मविद्या स्वरूप है" क्या बात है!

पूरी भावनाओं को निचोड़ कर रख दिया इन्होंने**,** इस एक वाक्य में नारी के सर्वगुण सम्पन्नता की अभिव्यक्ति कर दी ।

आगे कवि हृदय की पुकार देखिए "कर्ज कभी न उतरेगा" शब्द गूंगे हो जाते हैं सचमुच! वीर शहीदों की कुर्बानी रक्तफाग खेलते आजादी के दीवानों के वह इंकलाबी नारे आज भी फिजाओं मे सरगोशियाँ करती हैं क्या वर्तमान उनका कर्ज कभी उतार पाएगा आज भटकती अंधी गलियों में क्या युवाओं का उत्थान संभव है**?**

सचमुच यह एक ज्वलंत यक्ष प्रश्न है ।

"सदगुरू " की सटीक ब्याख्या इनकी चौथी रचना मैं दृष्टिगोचर होती है गुरू के गुणों की विशेषता बताते हुए उनकी महत्ता को रेखांकित करती रचना है जो वर्तमान में उनके बताए मार्ग पर चलने का एक अच्छा सकारात्मक संदेश देती है।

"मजदूर" में श्रमिकों के मनोभावों को अभिव्यक्त करने की कोशिश की गई है ।सचमुच मजदूर अपने श्रम और उसकी कीमत से आगे कुछ नही सोच पाता ।
अच्छी सोच के बावजूद यह रचना अन्यों की अपेक्षा कमतर लगी
इसे और भी कसौटी पर रखा जा सकता है ।
"नारी हूँ और नाज हूँ मै"
नारी कोमलता और कठोरता की समग्रता बयान करती पुरूषों को संदेश देती रचना में कवि नारी शक्ति का यशोगान करते हुए एक प्रबल सकारात्मक बात कहते है जो वर्तमान में त्रासदी झेलती नारी समाज के लिए सुखद और आशान्वित करती हुई रचना है। **अंत में**
"बेवा का दर्द "
नारी जीवन की मार्मिक स्थिति वैधब्य की मर्मान्तक पीड़ा तनाव और सामाजिक बेड़ियों में जकड़ी मानसिकता से त्रस्त नारी के मन की अकथित पीड़ा कवि की कलम से निकलने को आकुल दिखाई पड़ती है
तभी कवि कलम में ही दर्द की दवा तलाशने की बात करते हैं ।
देखा जाए तो प्रदीप जी की सभी रचनाएँ स्त्री विमर्ष और सामाजिक सारोकार के धरातल पर मन को छूती रचनाएँ हैं ।
यह सुखद आश्चर्य है कि एक पुरूष मन ने नारी की पीड़ा को उसकी भावनाओ को समझते हुए शब्दाभिब्यक्ति दी है।
ऐ**से** में लगता है स्त्रियों के लिए अभी आशाओं के दिए बुझे नहीं । बहरहाल!
प्रदीप जी की लेखनी भावपूर्ण एक सशक्त हस्ताक्षर होने का प्रमाण है ।
अंतरा पटल बधाई की पात्र है ऐसे कलमकारों की रचनाओं का हमें आस्वादन कराती है ।
अंत में प्रदीप जी से यही कहूँगी उनकी लेखनी अनवरत गगन स्पर्श करे।
हार्दिक शुभकामनायें

सुधा शर्मा राजिम

3.
अंतरा परिवार को कोटि-कोटि नमन!!!!
आज की केंद्रीय पोस्ट के लिए डॉ० साहब का चुनाव करके आप विद्‌वजनों ने हमें गौरवान्वित किया है , एडमिंस का सादर आभार!!!
डॉ० साहब बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। सरल और कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी होने के साथ ही खूबसूरत व्यक्तित्व के मालिक भी हैं।
हर क्षेत्र में सफलता के परचम फहराने वाले बहुत व्यावहारिक और संजीदा इंसान हैं ।
लेखन के प्रति लगन और बहुआयामी कार्य शैली इनको महान बनाती है। आपके सामने

कुछ नमूने रखे हैं | बहुत सुंदर और सशक्त लेखन के लिए आपको बहुत-बहुत बधाईयाँ और शुभकामनाएं !!!!!

साहित्य में डा साहब की अगाध श्रद्धा है और गहन रुचि भी। साहित्य प्रेम स्वाभाविक है मगर लेखन की शुरुआत अद्भुत है। हिंदी साहित्य पर अच्छी पकड़ है इनकी। शब्द भंडार भी अकूत है। इनके साहित्य में अधिकांशतः दार्शनिक और **आ**ध्यात्मिक ज्ञान की बेजोड़ प्रस्तुति देखने को मिलती है , क्योंकि प्रशासनिक सेवा की तैयारी के दौरान संपूर्ण भारतीय और पाश्चात्य दर्शन का अध्ययन कर चुके हैं। बहुत ही संघर्षशील और संवेदनशील इंसान हैं आप!! इसीलिए खूबसूरत और संवेदनशील भावानुभूतियों का ताना-बाना बुना मिलता है इनके साहित्य में। बहुमुखी प्रतिभा के धनी आप श्री अत्यंत कुशल प्रशासक भी हैं। बहुत बार ऐसी प्रशंसा सुनने को मिलती है कि हृदय गदगद हो जाता है। **"मां"** कविता में इनकी जननी के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव परिलक्षित होता है। " नारी" विषयक अनेक रचनाएं आपकी मैं पढ़ चुकी हूँ और मन ही मन आपको "घोर नारीवादी" की संज्ञा देती रहती हूँ । आपका नारी शक्ति के प्रति संवेदनशील और अनुरागी भाव आपके लेखन में श्रेष्ठता भर देता है। "कर्ज कभी न उतरेगा" कविता में आपकी मातृभूमि के प्रति कर्तव्य-बोध की भावना का पता चलता है। आप एक राष्ट्रवादी और देशभक्त लेखक हैं। **"सदगुरु"** शीर्षक कविता में आपकी अपने गुरुजनों के लिए विशेष सम्मान और आदर भाव को प्रकट करती है तथा पाठकों को प्रेरणा भी देती है। **"मजदूर हूँ !"** रचना तो बहुत विशेष बन पड़ी है। दलित और शोषित मजदूर के स्वाभिमान और ईमानदारी की मिसाल है आपकी लेखनी से झरी ये खूबसूरत रचना!! **"नारी हूँ और नाज़ भी हूँ !!"** तथा **"बेवा का दर्द"** आपके संवेदनशील हृदय से निकली सुंदर कविताएं हैं।

एक प्रखर लेखक वही है जो हर विषय पर विविध आयामी लेखन करे। आपमें यह खूबी अंदर तक समाई है। मैं एक पाठक के रूप में आपकी बहुत बड़ी प्रशंसक हूँ और आपके लेखन के सतत् विकास की निरंतर कामना करती हूँ । आपकी कलम चलती रहे और विविधतापूर्ण लेखन हमारे सामने रखकर प्रेरित करती रहे। आपके बिंब-विधान और भाव तथा कला पक्ष के साथ ही तार्किक पहलू भी प्रशंसनीय हैं |

हार्दिक शुभकामनाएं और बधाइयाँ आपको!!!

विमला महरिया

4.

आपकी पहली रचना **मां**,... आदरणीय प्रदीप जी बेहतरीन रचना वाकई मां से बड़कर इस जहाँ में कोई नहीं ईश्वर की इस धरा पर भेजी गई एक महान रचना है जो हर रुप में पुजनीय है.... फिर मां का क्या कहना**,...** बहुत ही सुंदर रचना

नारी.. वाह वाह क्या बात है**,** वाकई नारी तो इस जहाँ की वो खुबसुरत वरदान है जिसे ईश्वर ने बहुत ही फुर्सत और सम्पूर्ण व्यक्तिव से निखारा है मां बनकर प्रेम बांटती है गर्भ में अपने अंश की परवरिश करती है नौव माह तक बहुत ही सुंदर वर्णन किया है आपने नारी के रुपो और गुणों का**,....**

कर्ज कभी ना उतरेगा में आपने एक मां और धरती मां मातृभूमि और इस मातृभूमि पे मरने वाले वीर शहीदों की कुरबानीयो को सदैव जमाना याद रखेगा **,..**आपने अपनी रचना के माध्यम से बहुत ही सुंदर संदेश दिया है

सदगुरु,....बहुत ही सुंदर व्याख्या किया है आपने सद्गुरु का कहते हैं कि न जीवन और जिन्दगी भले बदल जाऐ लेकिन गुरुओं का स्थान सदैव उपर रहता है वो कभी नही बदलता पहले भी और आज भी ज्ञान हमें हमारे गुरूओं और महाज्ञान सदगुरूओं से ही मिलती है

मै मजदूर हूँ ,....वाह वाह क्या बात है**,** हर एक शब्द लाजवाब है शब्दों में ही सार है वाकई मजदूर मेहनत कर अपना जीवन यापन करते हैं फिर चाहे वो कोई भी मजहब का हो उसे अपनी मेहनत पर नाज होता है वह तन और मन दोनों को साफ रख अपना काम करता है एक सुन्दर संदेश देती हुई रचना के बधाई आपको

नारी हूँ और नाज भी हूँ,... नारी के विभिन्न रूपों और गुणों को बाखूबी उकारा है नारी सदैव सर का ताज है फिर जमाना कैसा भी हो वो हर कठिनाईयों के लिए सदैव जीवन तैयार रहती है हमें सदैव नाज होना चाहिए सम्पूर्ण नारीत्व जाति पर**,...**बहुत ही सुंदर नारी की परिभाषा को बाखूबी उकारा है आपने**,..** बहुत बहुत बधाई आपको

बेवा का दर्द,.... सभी दर्द को नारी हंसते हंसते सहन कर लेती है लेकिन एक बेवा का दर्द उसके जीवन में अभिशाप बनकर डंसता है सदैव उसी पीड़ा को सिर्फ वही जानती है जो जमाना उसे सुहागन में जो दृष्टि से देखता है वही उसके विधवा होते ही अपना नजरिया बदल लेता है**,...** एक विधवा के जीवन की अटल सच्चाई को आपने बाखूबी अपनी रचना के माध्यम से अपने शब्दों में पिरोकर हम सबके बीच में रखा है सभी खुबसुरत रचनाओं के लिए तहे दिल से मेरी तरफ से बहुत बहुत बधाई आपको...

सरोज सिंह ठाकुर

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com